माँ

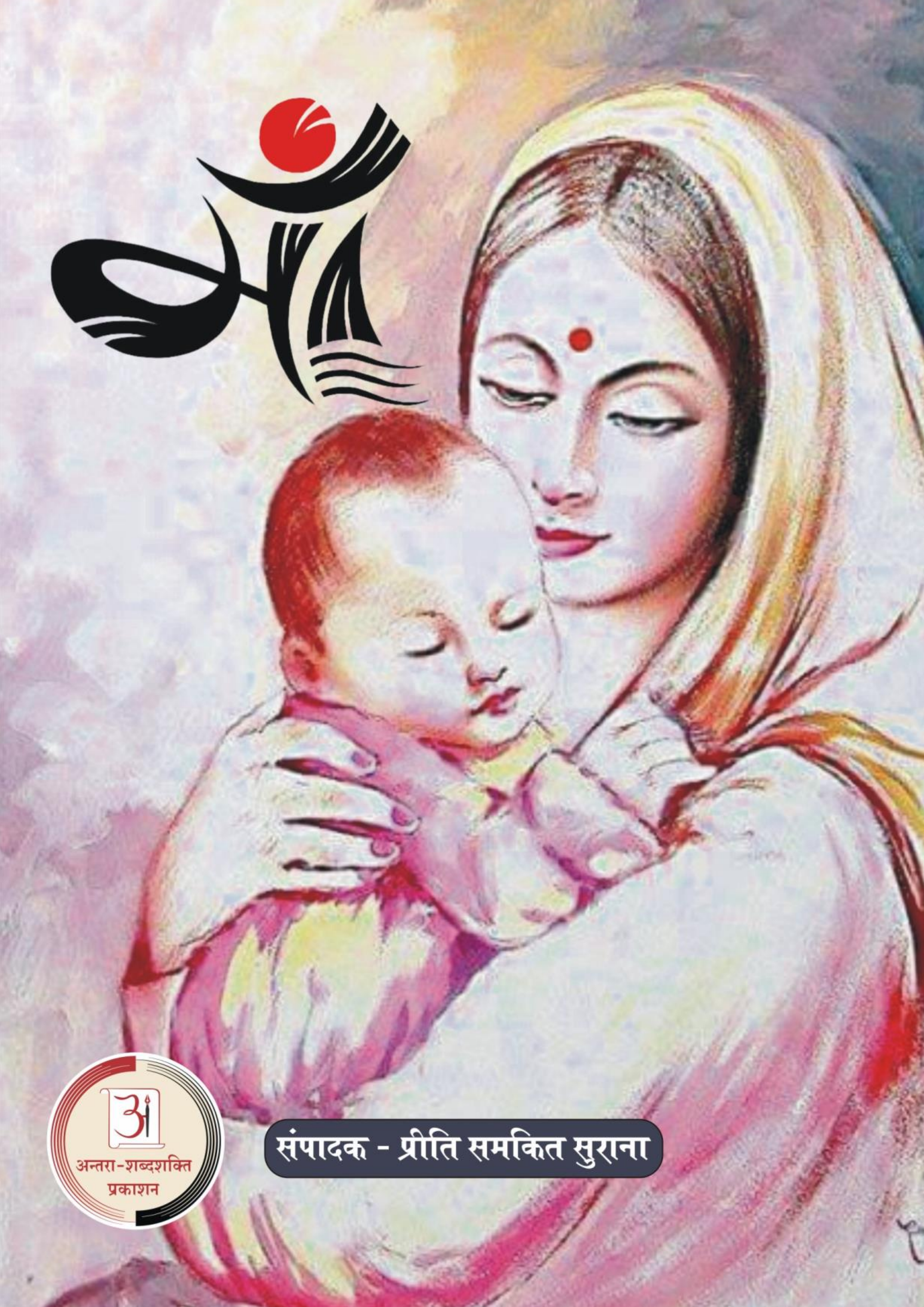

संपादक - प्रीति समकित सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

माँ

(साझा संकलन)

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-216-6
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020,
मूल्य - 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK EDITED BY DR PRITI SAMKIT SURANA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

माँ

जिसने सृष्टि को जना, जिसने हमें जना वो जीवनदायिनी माँ ईश्वर का साक्षात प्रतिरुप है। माँ शब्दातीत है, माँ केवल भाव सुमन अर्पित कर पूजनीय है।

मेरे लिए

"मां"
एक शब्द,
एक एहसास,
एक रिश्ता,
एक ममता

"मां"
एक जननी,
एक रचयिता,
एक संचालक,
एक पालक

"मां"
एक विश्वास,
एक समर्पण,
एक आस्था,
एक पूजा

"मां" में समाहित है
संपूर्ण सृष्टि
मां तुझे प्रणाम,...!

माँ को केवल मेरे शब्द नहीं बांध सकते फिर भी बता न चाहती हूँ,...

मेरी माँ
मेरी ज़िद,
मेरा गुस्सा,
मेरा संघर्ष,
मेरा लक्ष्य,
मेरे रास्ते,
मेरे उद्‌देश्य
सब कुछ मुझे घेरते हैं
अनेक प्रश्नों से
और फिर मैं रखती हूँ
खुद को उसकी जगह
और दे देती है
हर प्रश्न का उत्तर,.....
मेरी माँ!

आइये पढ़ते हैं अन्तराशब्दशक्ति के रचनाकार माँ को किस रूप में ध्याते है, किस रुप में परिभाषित करते है।

माँ को नमन!
सादर आभार

संस्थापक एवं सम्पादक
डॉ प्रीति समकित सुराना
अन्तरा शब्दशक्ति

अनुक्रमणिका

1.	डॉ प्रीति समकित सुराना	9
2.	नवीन जैन अकेला	10
3.	नवनीता दुबे "नूपुर"	11
4.	रेनु दीपक खर्द	12
5.	कृति गुप्ता	13
6.	अर्चना कटारे	14
7.	ऋषभ तोमर	15
8.	मंजू सरावगी मंजरी	16
9.	सुमित अग्रवाल	17
10.	कीर्ति प्रदीप वर्मा	18
11.	ऋतु कोचर, कटंगी	19
12.	अंजलि राकेश पंड्या	19
13.	प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'	20
14.	डॉ सरला सिंह स्निग्धा	21
15.	राजेन्द्र जैन 'अनेकांत'	22
16.	कैलाश बिहारी सिंघल	23
17.	आरती तिवारी सनत	24
18.	हेमन्त बोर्डिया	25

19.	मीना विवेक जैन	26
20.	इला सागर रस्तोगी	27
21.	डॉक्टर वासिफ़ काज़ी	28
22.	जयकृष्ण चांडक 'जय'	29
23.	सुधा शर्मा	30
24.	पूनम (कतरियार)	31
25.	सीता गुप्ता	32
26.	ओमप्रकाश गुप्ता	33
27.	किरण मोर	34
28.	हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्विनी'	35
29.	डा वर्षा चौबे	36
30.	सुकेशिनी दिक्षित	37
31.	धनेश्वरी देवाँगन धरा	38
32.	मीनाक्षी सुकुमारन	39
33.	शिखा बोर्डिया	40
34.	शिल्पा पाठक	41
35.	बीना शर्मा "झंकार"	42
36.	विश्वास जोशी	42
37.	नमिता दुबे	43
38.	मनोरमा चन्द्रा "रमा"	44

39.	पूनम झा	45
40.	बबिता कंसल	46
41.	अनिता मंदिलवार सपना	47
42.	साधना छिरोल्या	48
43.	प्रदीप सोनी 'शून्य'	49
44.	नीरजा मेहता 'कमलिनी'	50
45.	रेखा ताम्रकार 'राज'	51
46.	डा० भारती वर्मा बौड़ाई	52
47.	आरती डोंगरे	53
48.	प्रतिमा "संत" बाजपेयी	54
49.	अदिति रुसिया	55
50.	मनोरमा रतले	56
51.	डॉ. आशु जैन	57
52.	डॉ० कावेरी रूसिया	58
53.	लीना शर्मा	59
54.	नवनीता कटकवार	60
55.	रजनी शर्मा	61
56.	पिंकी परूथी "अनामिका"	62
57.	प्रदीप कुमार अरोरा	63

1.

माँ का दिन
जिस दिन शिशु गोद में
पहली बार रोता है,
रुदन से मुस्कुराने तक
पहले स्पर्श से माँ की कपाल क्रिया तक
हर दिन बच्चों की माँ का दिन
हर पल होता है
ये सृष्टि भी माँ है,
ये प्रकृति भी माँ है
ये धरती भी माँ है
कोख से किसी ने जन्म लिया
तो मिली माँ की पदवी।
फिर सोचिए किस-किस का मनाएँ दिवस,
इसलिये
बच्चों की भावना का खयाल रखते हुए
दुनिया में एक व्यवहारिक तिथि घोषित कर दी
मई में माँ का दिन दूसरा रविवार
चलो हो गए हम भी तैयार
खुश होने को बहाने ढूंढते हम
हमनें बच्चों का प्यार
मातृदिवस का त्यौहार
सरप्राइज़ और उपहार, किया स्वीकार
दिल से पूरे परिवार का आभार।

डॉ प्रीति समकित सुराना

2.

मां क्या उपमा दू तुझको,
किन शब्दों में बांधू मां।
मां तू विधना गूढ़ ग्रंथ,
किस विधि तुझको बांचू मां।

तेरे आंचल सी ममता,
धरती-अंबर न दे पायेंगे।
मां तेरी ममता का मोल,
जग के वैभव न दे पायेंगे।

तेरी गोद में सर रखकर मां,
स्वर्ग का सुख मिल जाता है।
तेरे चरणों में चारों धाम,
ईश्वर तुझको नित ध्याता है।

मां तू मरकर भी आज तलक,
जिन्दा है मेरी सांसों में।
नश्वर देह को त्यागा है मां,
मां अमर है तू अहसासों में।

नवीन जैन अकेला

3.

माँ तुम्हारी ममता का आँचल खो दिया पर,
तुम अब इस जहाँ में नहीं तो क्या,
ह्रदय में सदैव बसी रहोगी....
हमारे हर दुख सुख में तुम्हारा अहसास हमे है होता,
तुम हमारे हर आंसू में हर हंसी में रहोगी।।
तुम्हारा ममत्व, स्नेह की धारा ने
सार्थक कर दिया जीवन सारा,
तुम हमारी धड़कनों में हर खुशी में संग रहोगी।।
तुम्हारे दुआओं से जुड़े हाथ हमारे लिये,
सदैव हमारे रक्षक रहेंगे,
ओ मां! तुम सदैव हमारे जीवन धारा की
हर डगर में साथ चलोगी।
नहीं साथ अब तुम्हारी देह तो क्या,
तुम्हारा नेह सदैव हमें प्रेरित करेगा,
साथ रहेगा...!

नवनीता दुबे "नूपुर" मण्डला मप्र

4.

"तुम मेरी मां हो"
नहीं कहती,तुम मेरे लिए महान हो!
ना कोई जन्नत और ना सारा जहांन हो!!
मैं तो बस इतना जानती हूं कि तुम मेरी मां हो
कि तुम मेरी मां हो!
ना किसी से कभी कोई तुलना है,
और ना कभी कोई उलाहना है!!
जन्म लूं मैं जब भी बस तेरा ही संग हो!!! तुम मेरी मां ..
क्या सीखो तुझसे तेरा अनुभव ही मेरा ज्ञान विज्ञान है,
मिलते हैं जब दो शब्द तारीफ के तो यह तेरा ही मान है!!
कहे-अनकहे लफ्जों का पाठ हो!! बस तुम मेरी मां हो!!
बेटी हूं जुदा तुमसे होना पड़ता है!
दर्द-ए नासूर हर पीढ़ी को सहना पड़ता है!!
इस रीति से हरदम आंखें नम हों! बस तुम मेरी
"बेटी की मां" हूं इस भाव ने तेरा हक बढ़ाया!
तब ना समझा उस "मर्म" को, अब सब समझ आया!!
बेटी के रूप में भी तुम हो!! बस तुम मेरी....
तुम्हारे होने के "भाव" में, और ना होने के "अहसास" में,
हर्ष और वेदना के संगम की अद्‌भुत मिसाल हो!!
वंदन हो,अभिनंदन हो, रेनु का शत-शत प्रणाम हो, प्रणाम हो!!!!
बस, तुम मेरी मां हो! तुम मेरी मां हो! तुम मेरी मां हो!!!!

रेनु दीपक खर्द

5.

समय के स्वर्णिम पंख हैं कैसे,
अविरल गति से बढ़ते जैसे,
अभी ही तो बीते थे वो पल, तुम अंश बन मेरे भीतर आए,
अनकहे अनसुलझे से वो डर, जब नौ महीनों में अंत को आए,

अभी ही की तो बात है वो भी,जब मन तुम्हारी छवि बुनता था.
तुम स्वस्थ रहो सुबुद्ध रहो,बस यही कामना करता था

फिर वो दिन भी झूमता आया, जब तुम आए मेरी दुनिया में,
वो मन में बसी छवि भी अब, प्रत्यक्ष थी मेरी बाहों में,

वो टिमटिमाती काली आंखें, वो कोमल कोमल नाज़ुक हाथ,
अब तुम ही मेरी दुनिया हो, अब हर पल उत्सव तुम्हारे साथ,

हर दिन दिखलाते तुम नया रूप, हर पल होती कोई नई अदा,
पल पल ये दिल संग धड़केगा, अब अमर रहेगा ये प्रेम सदा,

जब माँ मेरी कहती थी यही, खुद माँ बनोगी तो पता चलेगा,
क्यों होती है चिंता क्यों टोकती हूँ, उसका भी तुमको उत्तर मिलेगा,

आज सत्य हुई मेरी माँ की बात, हर क्षण तुम्हारी चिंता होती है,
बेसुध जो हमेशा सोती थी, अब पल में चौंक के उठती है,

ईश्वर ने माँ तो बना दिया, अब इस माँ का है ध्येय यही,
नन्ही जान को अपनी अब, सिखलाना है चुनना पथ सही,

परमेश्वर से अनुपम देन मिली, उसका अब तो मान बढ़ाना है,
मातृ दिवस पर संकल्प यही, श्रेष्ठ मानव तुमको बनाना है
सबके हृदय में तुम राज करो,
ऐसा उत्कृष्ट, अद्वित बनाना है!

कृति गुप्ता

6.

पूजा करूं,वंदना करूं या करूं नमन
बस तेरे जैसा बनने को करता है मेरा मन
कहां से लांऊ वो वात्सल्य और प्रेम
कहां से पाऊं वो ममता और स्नेह
आज खड़ी पाती हूं अपने को अकेली
नहीं दे पाती अपने बच्चों को तुम सी बोली
क्योंकि संस्कारों और ज्ञान की कमी है मुझमें
माना कम पढ़ीं थीं दुनिया भर की किताबों से
पर अनुभव की पाठशाला में आगे थीं
ज्ञान और अनुभव से मालामाल थीं
याद नहीं वो गोद में लेकर सहलाना
याद नहीं लोरी गाकर सुलाना
पर सीख के हर शब्द याद हैं
वो बालों में अंगुलियों का स्पर्श याद है
साथ साथ काम करना और सिखाना
साथ में जीवन पथ की सीख देना
कठिन डगर पर हिम्मत रखना
यह सब जाने कब सिखा गयीं कुछ याद नहीं
माँ तुम कितनी अच्छी और भोली थी
दिखावा और बनावटीपन से कोशों दूर
बिना कहे हर बात समझ जाती थी
आज फिर से तेरी ममता की छांव में बैठना चाहतीं हूँ
तेरे आंचल तले बहुत कुछ सीखना चाहती हूं
अभावों में भी जन्नत दिखाती थी
सच्चाई की राह पर डटकर रहना सिखाती थी
वो माँ थी...हां मां,..थी जो ऐसा कर सकती थी

अर्चना कटारे, शहडोल (म.प्र)

7.

पुष्पों की कलियों सा मुझे निखार देती है
चुम कर माथा जब जब माँ प्यार देती है

बुरी नजर मेरा भला बिगाड़ सकती है क्या
मेरी माँ तो उसे नींबू मिर्ची से उतार देती है

देना को उसे भला मैं दे भी क्या सकता हूँ
वो तो मुझको ये समूचा ही संसार देती है

आग से तपती दुपहरी के भी आलम में माँ
सर्द मौसम के संग प्यार की बहार देती है

जब भी लौटता हूँ ठोकर खाके जमाने की
तो उदास मन को रंगों का त्योहार देती है

जब भी हार जाता हूँ खुद से लड़ते लड़ते
माँ दे आशीष जीवन को नई धार देती है

मंदिर मस्जिद गुरूद्वारे का मुझे पता नही
पर माँ 'ऋषभ' पापियों को भी तार देती है

ऋषभ तोमर

8.

आज मन में फिर अंधियारा छाया है माँ
तुम्हारी यादों का बादल गहराया है माँ

थपकी देकर देकर जो लोरी सुनाती
उसी लोरी सुनने को मन हरषाया है माँ

तुम्हारा प्यार तो चाँद की शीतलता देता
ममता सूरज सी देती मन को उजियारा है माँ

तुम मेरे जीवन की प्रेरणा स्रोत हो माता
तुमसे मिलती जिंदगी में खुशी की कलियाँ है माँ

तुम्हीं आस हो, तुम्ही ही मेरा विश्वास हो
तुम मेरी धड़कती सासों का एहसास हो माँ

तुम्हारे आशीर्वाद से सब कुछ मिला है मुझको
मंजू को तुम्हारे बिना सब सूना लगता है माँ

मंजू सरावगी मंजरी रायपुर छत्तीसगढ़

9.

असर माँ की दुआओं का कभी ज़ाया नहीं जाता
किसी बच्चे के सर से माँ का यूँ साया नहीं जाता

समझ ये बात मुझको अब तलक आती नहीं मौला
रहूँ भूखा तो मेरी माँ से क्यूँ खाया नहीं जाता

मेरे घर से निकलने पे हिदायत अब भी देती है
बड़ा मैं हो चुका हूँ माँ को समझाया नहीं जाता

नसीबों से मिला करती है दौलत माँ के आँचल की
ये वो तोहफा जो जन्नत में भी पाया नहीं जाता

मैं जो भी हूँ जहाँ भी हूँ फ़क़त तेरे करम से हूँ
तेरे होने से माँ मैं हूँ ये झुठलाया नहीं जाता

बने औलाद वाले तब कहीं जाकर समझ आया
जो देते ज़ख्म हैं बच्चे वो दिखलाया नहीं जाता

बची साँसें ये मुहलत मांगती हैं चंद लम्हों की
यूँ बच्चे छोड़ कर माँ से कहीं जाया नहीं जाता

सुमित अग्रवाल

10.

ओझा है या है तांत्रिक,
बलायें दूर करती है।
दिखे पत्थर सी ऊपर से वो
अंदर मोम रहती है।

याद करे औलाद ज़रा सा,
हिचकी उसको चलती है।
अंतर में वो दुःखी हो कितनी,
स्वांग खुशी का करती है।

बहुत निडर होती है माँ,
जो रब से न डरती है।
बूढ़ी माँ को जो ठुकरा दे,
दिल मे रोया करती है।

सदा खुशी रहना बच्चे,
बस यही दुआएँ देती है।
बिना स्वार्थ के जीवन मे
बस माँ ही दुआएँ देती है।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

11.

माँ को कोई कभी परिभाषित नहीं कर पाया क्योंकि
माँ सिर्फ शब्द नहीं पूरी सृष्टि इसमें समाई है,

हर एक की रचनाकार माँ तु ही है
जिंदगी किसीने बिना माँ के कहाँ पाई है,

कहते हैं की माँ बद्दुआ कभी देती नहीं
हर सफलता में माँ की दुआ ही रंग लाई है,

तेरी छोटी बहन कह देतें हैं मुझे देखकर लोग
मेरी हर तस्वीर ने तेरी ही झलक पाई है,

तुझसे ही सीखा है माँ जो भी अच्छा किया
मेरे अक्स से हरदम तेरी ही खुशबु आई है

बच्चे कहते हैं की मम्मी आप न जैसे लगते हो
लगूँगी ही मेरा हर जर्रा उनकी ही परछाई है।

ऋतु कोचर, कटंगी

12.

सूखती स्याही से भी रिश्ते यहां माँ लिखती है,
उर के कोरे पन्नों पर भी भावनाएं सींचती है,
क्या लिखूं क्या न लिखूं कैसे तुझे मैं पढ़ पाऊं,
मुझ अज्ञानी के कंठ-कंठ में नित अमी भी घोलती है।

अंजलि राकेश पंड्या

13.

देह में तुम प्राण जैसी, मन में हो सुविचार जैसी।।

हृदय मंदिर में तुम देवी, पूजा में सद्भावना सी।।
आँखों में तुम स्वप्न सलोने, स्याह निशा मे ज्योति जैसी।।

भोर की स्वर्णीम किरण तुम, वंदना में स्वर जैसी।।
तूफानों में नाव बनकर, खेती हो पतवार जैसी।।

आया पतझड़ गर जीवन में, मुश्किल में धैर्य जैसी।।
जीवन की तपती दुपहरी, धूप में शीतल छाया जैसी।।

आये जब-जब वंवडर, मद्धिम चलती व्यार जैसी।।
स्वार्थ,लोभ की भीड-भाड में, निस्वार्थ ममता की देवी जैसी।।

हो मरूभूमि या मृगमरीचिका, बरखा की फुहार जैसी।।
तन,समर्पित मन समर्पित, हृदय में तुम धड़कन जैसी।।

जीवन पथ की हो प्रदर्शक, थकन में आराम जैसी।।
क्या लिखूं कितना लिखूं अब? तुम हो माँ ग्रंथ या पुराण जैसे।।

प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

14.

मां तो मां होती है,
जननी जीवन देने वाली,
बच्चों को वो सेने वाली।
कठिन विकट पथपर भी,
बच्चों के हित चलने वाली।
मां तो मां होती है,
मां तो बस मां होती है।
बिना स्वार्थ सब कुछ करती,
नयन नेह से दुख वो हरती।
सबसे सुन्दर छवि है उसकी,
खुशियों से दामन है भरती।
मां तो मां होती है,
मां तो बस मां होती है।
मां ही तो जीवन महकाती,
कांटे चुनकर फूल खिलाती।
सदा विजय पथ की कामना,
सपने सुंदर नयनों में सजाती।
मां तो मां होती है,
मां तो बस मां होती है।

डॉ सरला सिंह स्निग्धा दिल्ली

15.

औषधि का अंबार भी,हरे न मन के रोग।
माँ ममता की औषधि,रखे सदा निरोग।1।

हृदय रोग उनको नही,जो माँ हृदय समाय।।
ईश्वर बसता माँ हृदय,जो सारे रोग नशाय।2।

मंदिर मस्जिद तीर्थ गढ, मनुआ करे उपाय।
माँ में सारे तीर्थ है,तू तीरथ क्यों जाय।3।

गंगा यमुना नर्मदा,जीवन रक्षक धार।
माँ कहकर ही पुकारे,यह सारा संसार।4।

ईश्वर अल्ला नाम जप,या मसीह गुणगान।
माँ की ही तो कृपा से,प्राणी पाता जवान।5।

युग पुरुषो की कथायें,जग मे बनी अमर।
माँ के ही संस्कार तो,करते उन्हे अमर।6।

माँ माँ माँ माँ नाम रट,रे प्राणी दिनरात।
क्षमाँ क्षमाँ तब क्रोध न,होगा शुभ्र प्रभात।7।

माँ महिमा गुणगान तो,कर न सकती जवान।
माँ सागर से अनंत,प्राणी बूँद समान।8।

माँ की ही तो कृपा से,'अनेकांत कविराय।
कलम चलाना सीखता,माँ ही राह बताय।9।

दो हजार सन ग्यारह,मंगलमय शुभ वर्ष।
दोहा छंद बनायकर,अनेकात मन हर्ष।10।

ग्यारहबी तारीख तब,अष्टम माह अगस्त।
'देख पपीहा आसमां,झरते मेघ समस्त।11।

राजेन्द्र जैन 'अनेकांत' बालाघाट

16.

जब से तुम आई जीवन में... खुशियाँ छाई विराने में...!
दिन में होली रात दीवाली... पल पल बिता मनाने में..!!

तन तो हीरे मोती पहने.... मन में सन्यासी भाव थे,
जीवन तो था रीता रीता... ना ही ममता के चाव थे,
मज़ा बहुत आता है मुझको... माँ तुमको यूँ सताने में...!
दिन में होली रात दीवाली... पल पल बिता मनाने में..!!

जीवन में सब कुछ पाया पर... मन में बहुत उदासी थी,
प्रथम गुरु की कमी तो हर पल... माँ की याद दिलाती थी,
तुमने दोनों फ़र्ज़ निभाये... माँ मुझको समझाने में...!
दिन में होली रात दीवाली... पल पल बिता मनाने में...!!

जिस माँ ने मुझे जन्म दिया... उसकी महिमा तो न्यारी थी,
डाँट डपट कर मुझे खिलाती.. उसकी ममता तो प्यारी थी,
कान्हा ने मिटटी खाई थी... माँ के वात्सल्य को पाने में...!
दिन में होली रात दीवाली... पल पल बिता मनाने में...!!

अनुपम कृति हो तुम ईश्वर की.. धरती पर उसका ही आकार,
शब्द सुमन चढ़ा चरणों में... हम करते है सपने साकार,
धन्य हुवा कैलाश अब तो माँ.. मन के भाव सुनाने में..!
दिन में होली रात दीवाली... पल पल बिता मनाने में...!!

कैलाश बिहारी सिंघल

17.

सारे संसार की दौलत देकर भी
मां का कर्ज इस संसार में कोई भी नहीं चुका सकता,
चाहे वह सारी धरा का स्वामी ही क्यों ना हो,...

मां वटवृक्ष जिसकी छाया में रहकर
सभी बालक पलते बढ़ते हैं,
संस्कारों का बीजारोपण होता है,..

पहला काम जो बालक करता है
दुनिया में आने पर सबसे पहले
मां को देखता है, मां को पहचानता है।

पहला संगीत मां से
पहला प्रेम मां से
पहली बोली मां से
पहला कदम मां से
पहली गुरु मां होती है
मां तुमसे ही संभव सृष्टि पर सब जीवन है

मां धरती पर ईश्वर है
मां के चरणों में स्वर्ग है
मां को इस तरह पर कोई जान न सका
ना ही कोई समझ पाएगा वह अबूझ पहेली सी है
जितना भी समझेंगे,..समझ नहीं पाएंगे,.... मां .!

आरती तिवारी सनत

18.

उसकी पीर, दर्द सब उसके, मेरे हिस्से कर दे मौला..
बस इतनी अरदास तुझी से, झोली मेरी भर दे मौला...

उसके आँसू, आह अबोले, सूरत लेकिन कह देती है,
मन भर पीड़ा को वह भोली, चुटकी भर है, कह देती है,
एक दवा संजीवन जैसी, मेरे हाथों धर दे मौला...
उसकी पीर, दर्द सब उसके, मेरे हिस्से कर दे मौला..

झाड़ू, बर्तन, चूल्हा, फटका, अब तक थे सब संगी साथी,
हुए अनछुये कई दिनों से तुलसी, मंदिर, दीपक, बाती,
उसके हाथों लगा हुआ जो, फिर उजला बिस्तर दे मौला...
उसकी पीर, दर्द सब उसके, मेरे हिस्से कर दे मौला..

बिना आस के हमसे उसने, अब तक अपना दामन बांटा,
कह कर "मेरा मन ही नहीं है", अपने हक का व्यंजन बांटा..
उसके हाथों बनी हुई फिर, रोटी घी से तर दे मौला...
उसकी पीर, दर्द सब उसके, मेरे हिस्से कर दे मौला..

एक हाथ गीता, रामायण, एक हाथ में पुण्य कर्म है..
माँ के आँचल में है दुनिया, माँ ही सार है, माँ ही मर्म है
तीरथ अधूरे पूरे कर दूं, इतना इक अवसर दे मौला...
उसकी पीर, दर्द सब उसके, मेरे हिस्से कर दे मौला..

हेमन्त बोर्डिया

19.

माँ की महिमा से कोई नहीं अनजान है
माँ की ममता तो कुदरत का वरदान है
माँ के प्यार से ही बच्चों की दुनिया शुरू होती है
माँ ही जीवन की प्रथम गुरू होती है
माँ के आँचल में बहुत सुकून मिलता है
माँ से ही कठिनाइयों में संबल मिलता है
माँ के हाथों का भोजन भी छप्पन भोग सा लगता है
माँ के आशीर्वाद से मेरा ये जीवन चलता है
माँ जहाँ होती वहाँ जन्नत होती है
बच्चों की खुशियाँ ही माँ की मन्नत होती है
माँ ही सृष्टि की रचयिता है
माँ ही भाग्य विधाता है
माँ की महिमा अद्भुत है
माँ से ही बनता हर नाता है
माँ तेरे कदमों में सारा जहां हमारा है
माँ तेरे चरणों में सत् सत् नमन हमारा है

मीना विवेक जैन

20.

ममता और वात्सल्य की पवित्र दिव्य मूरत
अपनी संतान के लिए माँ है सबसे खूबसूरत।
प्रेम, स्नेह से परिपूर्ण,
ईश्वर की कृत सर्वश्रेष्ठ रचना
सर्वप्रथम गुरुकुल, सर्वप्रथम गुरु,
माँ है हर कार्य में निपुण।
माँ सा समर्पण संभव नहीं
संतान के लिए ही जीती माँ
त्याग माँ के समान कोई कर सकता नहीं।
सर्वशक्तिशाली माँ खड़ी विरुद्ध
ढ़ाल बन संतान की ओर आती हर मुश्किलों के,
माँ तो है वो पावन धरा
जो खुद होकर बंजर
करती सर्वश्रेष्ठ पोषण प्रत्येक संतान का।
मार्गदर्शन करती संतान का
एक सफल जीवन की ओर
कच्ची मिट्टी सी संतान को
देती रूप एक भले मानव का
माँ की व्याख्या कर सके
ताकत नहीं किसी कलम में
जीवन की तपिश में
अपनी शीतल छाया देती माँ।
मेरे सर्वस्व की पहचान है माँ, ईश्वर का वरदान है माँ।

इला सागर रस्तोगी

21.

नेह दुलार बरसाती अम्मा।
यूं अपनापन जताती अम्मा।।

रूठकर जब मैं चिढ़ जाता।
पास अपने बुलाती अम्मा।।
मेरी ख़ुशियों में ख़ुश होती।
दुख से तो डर जाती अम्मा।।

मुझे ख़िलाने के चक्कर में।
ख़ुद भूखी सो जाती अम्मा।।
पापा जब मुझको डांट लगाते।
तो उनसे लड़ जाती अम्मा।।

मेरी हंसी को ज़िंदा रख कर।
सौ-सौ दर्द छिपाती अम्मा।।
जग में हर इच्छा पूरी हो मेरी।
अपनी इच्छाएं दबाती अम्मा।।

मुझको वो कहती राजदुलारा।
प्यार का टीका लगाती अम्मा।।
"काज़ी"मेरी वो ताक़त है।
ख़ुदा का वरदान है अम्मा।।

डॉक्टर वासिफ़ काज़ी, इंदौर

22.

कभी कुछ नहीं बोली, माई,
हरदम रही अबोली, माई!

सबके साथ हंसी मगर वो,
बंद कमरे में रोली, माई!

नींद की ख़ातिर बच्चों की,
खुली आंख से सोली, माई!

सारे शगुन समाऐं तुझमें,
कुमकुम, चंदन, रोली, माई!

नीम, करेले सी उपर वो,
भीतर से पूरन पोली, माई!

पूजा घर में आरती जैसी,
आंगन डली रंगोली, माई।

सारे त्योहार है आंचल में,
ईद, दीवाली, होली, माई!

दर्द,खुशी और सुख-दुख में,
'जय' की है हमजोली, माई!

जयकृष्ण चांडक 'जय' हरदा म प्र

23.

एक दिवस ही क्यों कहूँ,रग रग शोणित धार।
अंतर मन में राजती,करूँ साँस श्रृंगार।।

माँ बिन कैसी जिंदगी,छेद भरी हो नाँव।
जल बिन तड़पे मीन सी,डगमग होते पाँव।

आदि अंत की नींव है,सृष्टि की सृजन हार।
वातसल्य की सिंधु है,ममता भरे अपार।

वीर प्रसूता होत हे,करती सुत कुर्बान।
माँ जीवन संजीवनी,करे सदा अवदान।

बोझ उठाती बन धरा,सहती दारुण पीर।
मोल पियूश का कहाँ, देती छाती चीर।

ईश्वर का उपहार है, मिली अनमोल रत्न।
खोना नहीं कभी इसे,रखना सँभाल यत्न।

मात प्रथम गुरु होत है,बनती सदा कुम्हार।
क्रोध दिखावा ही करे,अंतर उमड़े प्यार।

कर्ज चुका ना पात है, करती त्याग अनूप।
नारी मन की शिखरतम,माँ की ममता रूप।

राजा हो या रंक जी, माता सदा अमीर।
भरे नेह की गंग है,पावन ममता नीर।।

सुधा शर्मा राजिम छत्तीसगढ़

24.

मां, तुम तिलिस्म रचती हो,
या, कोई टोना करती हो!
रुठें रहें या परेशान करें हम,
कभी नहीं भूखा रखती हो!

कभी कागा को बुलाती हो,
कभी चंदा को बुलाती हो,
और उनके आने से पहले ही,
झटपट हमें खिलाती हो.

हमारा बंद मुख खुलवाती हो,
अजूबा जग को दिखलाती हो.
देखो, कौर गायब करे बच्चा !
नन्हा-जादूगर बतलाती हो !!

विभिन्न पकवान अब खातें हैं,
छप्पन-भोग से भी अबअघाते हैं.
पर वात्सल्य,लाड़-मनुहार बिना
वो तृप्ति-संतुष्टि कहां अब पाते हैं?

पूनम (कतरियार)

25.

तेरे अस्तित्व से जुड़कर तो, इस जगत को पाया हूँ।
तेरे अमृत से सिंचित हो, सारी ताकत पाया हूँ।

लगे न ठोकर मुझे कहीं पर, तेरी अँगुली जो पकड़ा हूँ।
सूरज का भी ताप हो फीका, आँचल जो मैं थामा हूँ।

तेरी लोरी सुनकरके माँ! परी लोक को घूमा हूँ।
चाँद से बातें कर-करके मैं, सुख की नींद में सोया हूँ।

कंटक भी बने सुमन राह के, तुम सा माली जो पाया हूँ।
माँ के कदमों की जन्नत का, मार्ग सुगम जो पाया हूँ।

मिली सफलता हरदम मुझको, तेरे ही आशीषों से।
जहाँ आज मैं खड़ा हुआ हूँ, तेरी ही दुआओं से।

मैं नसीब वाला हूँ जग में, तुम जैसी जो माँ मिली ।
तेरी ममता की झोली में,माँ मुझको जो जगह मिली ।

सीता गुप्ता दुर्ग छ. ग.

26.

भले ही हमारी माँ अब असार संसार में नहीं है,
पर मेरे लिए उसके भाव में आभार कम नहीं है।
हर तडपन में पाता हूँ क्यू उसकी सांसो की धडकन।
चहुँ ओर से घेर लेती है,फिर उसके दिल का तडपन।
कहती, कुछ छिपा नहीं सकता तेरी जिस्म की आत्मा हूँ,
बोली,तुम मेरे जिस्म का हिस्सा हो,और मैं ही तेरी माँ हूँ।1।

एक रात कुछ हालातों में सोचते सोचते मैं खो गया था,
अकेले ही चिन्ता की साया में अर्ध निद्रा में हो गया था,
तभी हमें सपना आया कि मा ॅ का अन्तकाल हो गया है।
अन्तिम यात्रा कर वह नश्वर देह मशान घाट पहुंच गया है।
सोचा अब लकडिया ले जाकर शव को इनमें समा दू।
बोली मेरे जिस्म का हिस्सा हो,और मैं ही तेरी माँ हूँ।2।

तभी सह साथी, मुझे छोड़ अकेला अपने घर को चले गए।
शोक में डुबाकर मुझे जाने क्यूं शव छोड घर को चले गए।
मैं पछताता फिरता किअब कैसे करूँ यह अकेला काम,
अब कैसे मैं अग्नि लगाऊंगा, अभी लकडिया ॅ हैं तमाम,
तब आत्मा निकल आई,बेटा मैं तुमको देख परेशान हूँ।
बोली,मेरे जिस्मका हिस्सा हो,और मैं ही तेरी माँ हूँ।3।

मा ॅ बोली, तुझको माटी की गोलियों से जोड सिखाया,
गुरुओं से हाथ जोड़ तुझे इस जीवन का मोड सिखाया,
भीषण गर्मी में मेहनत कर,बहे पसीने का मोल बताया,

मैं लकडी चिता पर देती हूँ बेटा अब तू इससे घबराया,
बस तू आग लगा देना, बस तेरी बुझ जाने वाली शमां हूँ।
बोली, तुम मेरे जिस्म का हिस्सा हो,और मैं ही तेरी माँ हूँ।4।

मैंने बोला माॅ तेरी यह बडी निर्मल अनुपम काया है,
गौतम गांधी या राम कृष्ण इसमें ममत्व को पाया है,
तेरी साँसों की गर्मी में सर्दी के कितने उच्छ्वास सहे है,
तेरी यादों के बल से कितने आतप वनवास सहे हैं,
बुदबुदाई तुम हो मेरे व्याज सदा, मै तेरी पूँजी जमा हूँ।
बोली तुम मेरे जिस्म का हिस्सा हो और मैं ही तेरी माँ हूँ।5।

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

27.

मां तेरे वात्सल्य का एक नहीं है रूप
तू धारण कर सकती जाने कितने रूप
मां होकर बच्चों पर ममता खूब लुटाती है
बेटी होकर कभी पिता के लिए मा बन जाती है
पत्नि बनकर प्रेम समर्पित हो अपना सर्वस्व लुटाती है
बहना जो कहलाई तू जो रक्षाबंधन भी मनाती है
कितने रूपों में है सजी मां ममता की मूरत बन जाती है
अपने लिए कुछ कभी न चाहे सबपर वात्सल्य लुटाती है
जग में मां दूजा कोई तुझसा हुआ नहीं
एक रूप ही रहकर पर मां दसों रूप दिखलाती है।
प्रेम का तेरे रूप अनूठा कभी समझ न पाए कोई
सब को सब कुछ अपना देकर तू जननी कहलाती है।

किरण मोर कटनी

28.

खुशियों का है खजाना, खुशियों का है खजाना,
हे मां तेरे आंचल में,खुशियों का है खजाना।

उंगली पकड़कर चलना, माता ने हमें सिखाया,
गिर गिर के फिर उठना, पिता ने ही हमें बताया,
तुमसे ही हमने सीखा, तुमसे ही हमने सीखा,
सगर्व सिर उठाना, खुशियों का है खजाना,,,,,,,,

दुनिया के ये झमेले,मां-बाप बिन अकेले,
आखिर कोई कहां तक, जीवन भर इनको झेले,
तुमसे ही हमने सीखा, तुमसे ही हमने सीखा,
इन्हे प्यार से निभाना, खुशियों का है खजाना,,,,,,,,,

दुनिया में हम हैं भटके, पर कहीं पर ना अटके,
हमको डिगा न पाए, तूफानों के भी झटके,
शक्ति हमें है देता, शक्ति हमें है देता,
तेरे प्रेम का तराना,खुशियों का खजाना,,,,,,,

सूरज कहीं भी जाए, हम पर न धूप आए,
मां-बाप की दुआएं, हमको बचाती जाए,
बरगद सी छांव देता, बरगद सी छांव देता,
पलकों का शामियाना, खुशियों का है खजाना,,,,,,,

हेमलता राजेंद्र शर्मा मनस्विनी
साईं खेड़ा नरसिंहपुर मध्य प्रदेश

29.

माँ तू हमें हमेशा ही मुझे बहुत याद आती रही।
उस अकेले बचपन में भी
जब मुझे डर लगता
नींद नहीं आती, चोट लगती
और अकारण मुझे कोई टोकता
मेरी आंखों से बहते आंसू
स्वयं को खुद में समेटे
ढूंढते, तलाशते कोई आंचल
जहां मेरी सारी शिकायतें जा ठहरती
और वो ममता का आंचल
मेरी उन तकलीफों को सहलाता, दुलारता।
मैंने तेरे बिना जीना सीखा नहीं, जीना पड़ा।
आज भी मेरे निराशा, हताशा के क्षणों में जहां तू मुझे
ढाढस बंधाती प्रतीत होती है
वही मेरे सफलता में तू मुझे आशीष देती है।
और तेरी आंखों से बहते प्रेमश्रु को मैं
साफ देख पाती थी।
आज भी जब मैं बहुत परेशान,
दुखी या थकान का अनुभव करती हूं
मां तेरा प्रत्यक्ष स्पर्श मेरी पीठ को सहलाता प्रतीत होता है
पर मन करता है एक बार तुझ से लिपटने का
तेरे आंचल में सोने का
मां वादा कर अब की बार इतनी जल्दी
अकेला छोड़ मुझे कहीं नहीं जाएगी
कुछ पल मेरे साथ और बिताएगी।

डा वर्षा चौबे

30.

मां वह ऊर्जा है
जो समायी है प्राण की हर कोर में,
मां नहीं है सीमित
कुछ शब्द की रेखाओं, और रूप आकार में।।

नहीं कर सकते "परिभाषित"
मां को अनेक.... परिभाषाओं में....।।
अधूरे ही होंगे.... अनेक ग्रंथ,, आज तक
मां के मातृत्व की   बहती धाराओं को
बंद.... पन्नों में समेटने में।।

मां व्याप्त है .समूचे ब्रह्मांड के
अदृश्य उस हर, कोण में।
निर्माण के गर्भ से... उद्भूत
मां का विपुल,, संतति-संसार....।।

बुनती रहती है .मां
अपने प्रेम और मातृत्व-भाव के ....
झीने अति बारीक...रेशमी धागों से....
अनूठे.... अमूल्य, रंगीन से वस्त्र।।

अनेक आशा उम्मीद से....
घर, द्वार और देहली को, दीपों से सजाए....
बिता देती है मां,.. अपना संपूर्ण रिक्त....जीवन....
उस निर्माण-- शाला में, उम्र भर तप कर.......।।

सुकेशिनी दिक्षित

31.

माँ जैसा कोई नहीं, माता देवी रूप।
शीतल छाया गोद में, खुशियाँ मिले अनूप।।

जग से न्यारी माँ लगे, माँ ममत्व का मर्म।
पाया जीवन मात से, नहीं मातु का धर्म।।

बनती सुख की छाँव माँ, आँचल तले दुलार।
ममता धागा बाँध के, जीवन देती तार।।

हरदम करती प्रार्थना, भरा आशीष हाथ।
कोमल काया साहसी, धीरज संयम साथ।।

पशु हो चाहे नर रहे, माँ सबकी आधार।
स्नेह समुंदर चित्त में, ममता भरा अपार।।

धनेश्वरी देवाँगन धरा रायगढ़, छत्तीसगढ़

32.

"माँ" अक्षर
में सिमट पूरा संसार
हर खुशी, हर आस, हर विश्वास
से बुना ये रिश्ता प्यारा।।
न कोई छल इस में
न कोई मिलावट
न कोई बनावट
बस निश्छल स्नेह
से बुना ये रिश्ता प्यारा।।
माँ क्या होती है
कितना दर्द वो सहती है
कितनी जान वो लगाती है
खुद को भूल ही जाती है
करने में बड़ा हमें
हुआ हर इक बात का
एहसास खुद माँ बनने पर
सच न माँ से बड़ा कोई
न ही माँ बनने से बड़ा सुख कोई
"माँ" अक्षर में सिमटा पूरा संसार
हर खुशी, हर आस, हर विश्वास।।

मीनाक्षी सुकुमारन

33.

तेरी बगिया का एक फूल हूँ माँ
तेरा ही तो मैं अक्स हूँ माँ,,,
जब जब दुनिया ने आँख दिखायी
तू बहुत याद आयी है माँ,,
तेरे जैसा किसी ने नहीं चाहा
आँचल में तेरे फिर से आयी हुँ माँ,
तेरा ही तो मैं अक्स हूँ माँ,,,

आँख खुली तो तुझको ही पाया था,,
तेरा ही तो स्पर्श मुझे भाया था,,,,
बचपन की तरह फिर से बुला ले माँ,,,
मुझे फिर तेरी गुड़िया बना ले न माँ,,,
तेरा ही तो मैं अक्स हूँ माँ

माँ बन कर जाना है दर्द तेरा
खुद को जब पाया जहाँ था कल पाँव तेरा
कितना सताया होगा मैंने भी तुझे,,
आज महसूस मैं करती हूँ माँ,,,
तेरी बगिया का फूल हूँ मैं माँ
तेरा ही तो मैं अक्स हूँ माँ

शिखा बोर्डिया, दमन

34.

वो दो कदम चलकर ही
ठहर जाती है,
एक जोड़ी आँखे है
जो अंधेरे में भी
मुझे निहारती है,
कई योजन दूर सही
पर एक हृदय मेरे लिए
हर पल धड़कता है,
छोटी सी ठोकर भी मेरी
उसकी आँखें नम कर जाती है
तपती धूप हो या
बारिश की भीगें
एक आँचल की छाया
सदा छाँव कर जाती है,
उसका वो एक स्पर्श
मेरा रक्त संचार है,
जो थम जाऊँ, जो सिमट जाऊँ
राह भूलूँ या हार जाऊँ,
वो स्वतः ही थाम लेती है
हर रूप मेरा उसे स्वीकार है
हर रूप में वो मेरे सदा साथ है
यह एहसास ही मुझे संबल देता है,
ए माँ। तुझे नमन....!

शिल्पा पाठक

35.

तू ही माँ अभिमान हैमेरा।
तू ही स्वाभिमान है मेरा।
धरती से अम्बर तक फैला
तू सारा जहान है मेरा।।

तू मुझमें थी सदा रही।
जीने की तुझसे अदा रही।
धरती से अम्बर तक देखा
हम सब में तू ही फना रही।

कैसे क्या किसको बतलाऊँ।
जग को क्या कितना समझाऊँ।
तू तो कायनात थी मेरी।
तुझसे ही पहचान है मेरी।।

बीना शर्मा "झंकार"

36.

क्या लिखु माँ तुझ पर?
तुमने ही तो
अ,आ सिखाया,
दुनियादारी का सबक समझाया,
रहने दे मुझे शैशव में,
पल्लवित होता रहूँ
बस तेरी माटी मे
निस दिन, बस प्रतिपल
मैं निशब्द रह कर,
हर दिवस करु न्यौछावर माँ तुझ पर।

विश्वास जोशी

37.

माँ! जब भी चाहा तुझको समझूं
समंदर से गहरी, आकाश से ऊंची निकली तुम
तुममें माँ होना आसान ना था

तेरी काया.... तेरा आशीश . तेरा व्यक्तित्त्व
मन में लिए स्नेह की थाती
असीम त्याग और कर्तव्य की पाती
दृढ कदमों से आगे बढती
आत्मसम्मान की पूंजी अपनी सर्वथा पूरी भरती,
गलत को गलत, सही को सही,
कहते, करते ना डरना, ना झिझकना
यही पत्थर की लकीर मन में खींच तुम मुस्कान,....
आपदाये-विपदाये जब सर्वत्र घेरे थी
अपनों ने नजरे भी फेरी थी
तब तुमने ही सब सम्भालना था
वीरांगना की भाँति लक्षय साधा था
हम भाई-बहन को पढा लिखा
जीवन ध्येय को पूरा किया,
आज हम सबकी जिंदगी की खुशियां
तुम्हारी कर्मठता की देन है,
तुम्हें नमन बारम्बार नमन माँ
स्नेहित मातृत्व का पा आशीर्वाद
आज माँ का दायित्व निभा रही हूं मैं
खुद में तुमको जी रही हूं मैं।।।।

नमिता दुबे

38.

माँ जैसा कोई नहीं, उनकी जग सन्तान।
हमें जन्म उसने दिये, बात नहीं आसान।।

ममता की नित ध्येय धर, करे स्नेह बौछार।
अपने सुख को त्याग कर, सहती कष्ट अपार।।

जीवन भर पालन करे, मातृ शक्ति तू जान।
पूत कुसंगत पथ चले, हुए मात अपमान।।

माँ आँचल को देख लो, देते शीतल छाँव।
वह घर स्वर्ग समान है, धुले जहाँ माँ पाँव।।

शक्ति धैर्य के रूप माँ, करलो नित्य प्रणाम।
सभी तीर्थ में घूम लो, मात चरण सुख धाम।

मनोरमा चन्द्रा "रमा" रायपुर (छ.ग.)

39.

कलम बगलें झांक रहा है।
पन्ना चुप हो के ताक रहा है।

माँ की ममता को शब्दों में कैसे
पिरोऊँ, मन ये सोच रहा है।
प्रेम,प्रीत तो बहुतों ने रचा,ममता
रच,इक माँ का दिल कह रहा है।

शब्द होकर भी शब्द नि:शब्द है
उपयुक्त शब्द के द्वंद्व में खो रहा है।
जागते हुए भी मन शब्दों के जाल
में उलझकर,थका जैसे सो रहा है।

एक मधुर ध्वनि से तंद्रा भंग हुई देखा
फोन में एक नाम चमक रहा है।
अहा! दिल में खुशी,आँखों में चमक थी
फोन में "माँ" जो अंकित हो रहा है।

पूनम झा कोटा,राजस्थान

40.

जीना सीखा मां तुम से
जीवन की डगर तुम
ने सुझायी सही राह
मां तुम प्रेम की सजीव मूरत,
मां तुम से सीखा
सूरज, चंदा तारों आकाश, बरसते बादलों
हरी भरी, वृक्ष, पत्तो फूलों, खगवृदों से
जीवन के रंगो की हर धूप से हर छांव
देखना इन्द्रधनुषी रंगों को
मां तुम्हारी निर्मल सत्ता की
तुलना ना कोई सम्पदा
ना उपमा ना रूपक ना अलंकार
ना उपाधि बस शब्द है मां
मां तुम आईना हो जिसमें मै पाती अपनें को।
मेरा अस्तित्व हो
मेरी धड़कन में बसी हो
आज तुम्हारे दिये संस्कार मेरा गर्व
प्रतिदिन बात करती हूं,
आती यादें बचपन की वापस
मां उम्र के इस दौर में भी लौट आता है बचपन
लगता है अभी भी छोटी बच्ची हूं।
मांगती हूं भगवन मां रहे स्वस्थ, खुश, बना रहे साथ
आशीर्वाद से उठते रहे हाथ।

बबिता कंसल

41.

माँ,
आज तुम बहुत याद आयी
याद में तुम तो हमेशा हो
पर कहते हैं न
जब कोई मुसीबत, तकलीफ
सामने आती है हमारे
तो बस माँ याद आती है
वो इसलिए कि
एक माँ ही होती है
जो बिना बताये
हर परेशानियाँ समझ लेती है
माथे पर पड़ी एक लकीर
को भी पहचान लेती है
आज बिस्तर पर पड़ी
दुख की घड़ी में
बस माँ का ही चेहरा है
हाँ, काश तुम पास होती मेरे
तुम्हारा पास होना ही
सब तकलीफ दूर कर देता
सच माँ, तुम बहुत आद आयी
हाँ, बहुत,..!

अनिता मंदिलवार सपना
अंबिकापुर सरगुजा छतीसगढ़

42.

"मेरी माँ है प्यारी-प्यारी,
जैसे फूलों की फुलवारी।।
मेरी माँ का हरदम कहना,
खाली हाथ कहीं न जाना।।
कुछ पैसे और एक रुमाल,
सदा रखो तुम अपने साथ।।।
गाना गाना,टी.वी देखना,
किन्तु साथ में काम भी करना।।।।
किसी काम से पीछे न हटना,
खूब पढ़ाई करते रहना।।।
बातें पुरानी उनकी जुबानी,
इसका कोई नहीं है सानी।।
अंग्रजों के समय की बातें,
खूब सुनी हैं उनकी जुबानी।।।।
सबसे मिलतीं पूरे जोश से,
सबको बाँधे एक डोर से।।।
यूँ ही सबको बाँधे रखना,
आशीर्वाद बनाये रखना।।।

साधना छिरोल्या

43.

माँ

ममता की आँखें

अधर रूप वाणी का,

आँचल आशीषों का,

सहयोगी हाथ सदा,

संतति सृजन सदा,

पग पग पालना।

प्रकृति स्वरूप माँ।

धड़कन धड़कन जीवन।

भाव भाव उपवन।

सौम्य सहज सरल

प्रवाह अविरल,

जिसका हृदय तल।

लौकिक ब्रह्म रूप

समर्थ सकल शक्ति स्वरूप।

सृष्टि महाकाव्य माँ।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

44.

कैसे भूल सकती हूँ
जब पहली बार
मैंने उसे गोद में लिया था
मैं निहाल हो गयी थी,
छोटा सा चाँद सा गोल चेहरा
मानो अमावस में चाँद खिला हो,
गुलाब की पंखड़ियों सी
मखमली गुलाबी त्वचा,
रुई जैसे कोमल कपोल,
चित्रकार सदृश
पतली-पतली लंबी
अंगुलियों के लंबे नाख़ून,
मीलों आगे बढ़ने के लिए
नन्हे-नन्हे गुदगुदे पैर,
परी जैसे
रेशम से सुनहरे बाल,
दुनिया को देखने को आतुर
कभी खुलती तो कभी
तेज़ रोशनी से
चौंधियाती आँखें,
बन्द मुट्ठियों में अपना
भविष्य लिए
वो नन्ही सी जान
जब कसमसाकर मुझमें
अपनी सुरक्षा ढूँढती
अमृत पान की आशा लिए
मेरे आँचल में
अपना मुँह छुपाती,
मैं सब कुछ भूलकर
उसे अपनी छाती में
भींच लेती।

वो पल जब मैं माँ बनी थी
मुझमें समाया था एक
ज़िम्मेदारी का एहसास,
आश्चर्यचकित हो जाती
मुझे वो माँ कहकर पुकारेगी,
रोमांचित हो जाती
मेरे जिस्म का अंश है वो,
गर्वित हो जाती कि
एक बेटी की माँ हूँ मैं,
उस प्रथम मातृत्व को पाकर
भूल गयी थी प्रसव वेदना,
मेरी दृष्टि उसको
निहारती रहती
स्नेह से भीगी मेरी आँखें
बरसती रहतीं,
न जाने कितने भाव
आते-जाते,
पलक झपकते ही
मुझे उसकी जीवन यात्रा
दीख जाती,
मुझे एहसास हो जाता
एक दिन वो भी माँ बनेगी
मुझे लगता, मैंने एक बेटी को
नहीं
मैंने एक माँ को जन्म दिया है
हाँ, एक माँ को जन्म दिया है।

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

45.

जो सिर पे है माँ का हाथ
लगे जिंदगी है मेरे साथ

हर आश फलीभूत होती
नैन अश्रु बन जाते मोती
माँ की दुआ रहती साथ
लगे जिंदगी है मेरे साथ

हरपल मेरा ध्यान रखती
सुखदुख का भान करती
जब कष्ट हर बनती नाथ
लगे जिंदगी है मेरे साथ

कम में बहुत का एहसास
मन कभी न करती उदास
वही जीत मेरी वोही मात
लगे जिंदगी है मेरे साथ

रेखा ताम्रकार 'राज'

46.

सारी दुनिया से
अपने लिए कुछ गिनती के पल बचा कर
सोचने बैठती है अपने बारे में
तो पाती है वह तो कहीं है ही नहीं
उसका अपना कुछ भी नहीं
उसके सपने/ पसंद यहाँ तक की उसका अस्तित्व भी
कुछ भी तो नहीं रहे उसके पास,
भूल चुकी है सबकुछ
याद रहता है बस घर/ पति और बच्चे,
घर उसे अनुभव करता है
पति साथ देता है
पर वो भी नहीं झाँक पाता
उसके हृदय की अतल गहराइयों में
क्यों कि एक दरवाजा वह सदा बंद रखती है,
उसकी अनुमति के बिना प्रवेश नहीं कर सकता पति भी,
बच्चे तो सदा रहते हैं अपनी ही बनायी दुनिया में मस्त,
बस वह स्वयं ही कभी खोलती है उस दरवाजे को
स्वयं से मिलती है और बंद कर लौट आती है
यह स्वयं से मिलना ही उसका एक ऐसा अधिकार है
जो वह किसी को नहीं देती।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

47.

माता तेरी गोद ही, जीवन का आधार।
शीतल सी यह सेज है, सरल सुखद संसार।

खुशियाँ जग की दे मुझे, रखा दुखों से दूर।
आँचल की छाया तले, सुख पाया भरपूर।

माँ ममता की मूरती, करती लाड़ दुलार।
धरती पर ये ईश का, है अनुपम उपहार।

रामायण गीता तुम्ही,वेदों का सब सार।
शक्ति अनन्या रूप है, माता ही करतार।

प्रथम गुरु तुम ही मेरी, दिए सबल संस्कार।
ऋणी रहूँगी सर्वदा,जन्मो जनम अपार।

त्याग समर्पण प्रेम का, निष्ठा का है रूप।
नतमस्तक होते सभी, रंग रहे या भूप।

अखिल विश्व में गूँजता, एक यही बस नाम।
जग जननी, माँ,भारती,सौ सौ बार प्रणाम।

चरण वंदना मैं करूँ, मिले यही अधिकार।
मेरी यह आराधना,कर लो माँ स्वीकार।।

आरती डोंगरे

48.

तेरे तो सब दिन हैं माता
तू ही मेरी भाग्य विधाता
एक दिवस तेरे नाम करूँ
क्या तुझे एक ही शाम धरू

हम भारत के रहने वाले
हर दिन साथ निभाती माँ
चरण धूलि पित मातु की
हमें सदा ही भाती माँ

पाश्यचात की रीत यही
संस्कृति यह हमारी नही
आसमान सा खुला है मन
दृग देखो माँ के पावन

बोली में अमृत छलके
चेहरे पर भोलापन झलके
कठिन तपस्या करती माँ
बच्चों के दुख हरती माँ

तूफानों से हर पल लड़ती
फुलवाड़ी सी हरपल झड़ती
माँ को देखें शाम सकारे
साथ रहो माँ पास हमारे

प्रतिमा "संत" बाजपेयी, मंडला एम पी

49.

सुनों माँ!
अपना ख़याल रखना
मुझे पता है
दिन रात
तुम सिर्फ़ काम करती हो
आराम तो जैसे
भूल ही गई हो
सबका ख़याल रखते रखते
देखो क्या हालत बना ली है
कैसी थकी थकी
तुम लगती हो
हाँ!
इस काम के चक्कर में
अपनी दवाइयाँ न
भूलना माँ
समय पर ले लिया करो
मुझे पता
आपकी आदत
भाई की हर
ख्वाहिश पूरा करना
पापा की इच्छाओं को पूरा करना
बस यही तो
तुम करती आई हो माँ
थोड़ा वक्त अपने लिए भी
निकाल लेना
थोड़ी सी साज सँवर
इस तालबंदी में कर
अपने आप को
थोड़ा तरोताज़ा कर लेना
मुझे पता है
अभी तो सहेलियों से
बात भी होती होगी कम
जरा समय निकाल
उनसे भी बतिया लेना
जाना कहीं नहीं
अपना ख़याल रखना
थोड़ी दूरी
सबसे बना कर रखना
ज़िंदगी से बड़कर
कुछ नहीं है माँ
किसी को
बुरा लगे तो सुन लेना
जल्द ही ये दूरियाँ होंगी कम
फिर साथ मिलकर
बैठेंगे हम
ये प्यार से
सबको समझा देना
अच्छा माँ
सुनों !
मैं तो नहीं
तुम सबका ख़याल रखने वहाँ
तुम्हीं सबका ख़याल रखना
और हाँ,..अपना भी!

अदिति रुसिया

50.

माँ, माँ होती है
माँ ना तेरी होती है माँ ना मेरी होती है
माँ तो सिर्फ माँ होती है

माँ शब्द सुनके
दिल से बस प्रणाम ही निकलता है
माँ के लिये तो प्रभु का भी सिर झुकता है

माँ बोलते ही
वाणी मे अमृत सा घुलता है
जैसे मुझसे मेरा भगवान मिलता है

माँ ही तो
भगवान है तभी तो दुख मे
मुँह से पहले माँ निकलता है माँ...मम्मी

सच क्या लिखू
माँ का भी आदि ना अंत है
माँ जब चाहो हमेशा हर जगह तुरंत है

चाहे वो यादो मे साकार..
या.फिर आशीर्वाद बनके
और ना जाने कितने रूप धरके..

इसीलिये संत जन कहते है
वेद शास्त्र कहते है
माँ तो माँ होती है
माँ तो भगवान से भी पहले भी होती है
और बाद भी..।।

मनोरमा रतले

51.

चलते हुए अकेले, पथरीली सुनसान राहों में
एक का पकड़ के हाथ दूजी को समेटे बाहों में
माँ तुमने हमारा जीवन सम्भाल लिया
माँ ! तुमने हम दोनों को अकेले ही पाल लिया।

दुःख की घनघोर घटाओं से लड़कर
तूफ़ानों से घिरी अपनी नैय्या को कसकर
माँ तुमने भयंकर बवंडर से निकाल लिया
माँ ! तुमने हम दोनों को अकेले ही पाल लिया।

अकेले ही अपनी निराशा से जूझी
विधाता की लेखनी की भाषा न बूझी
धर्म रास्ते चल उसी में खुद को ढाल लिया
माँ ! तुमने हम दोनों को अकेले ही पाल लिया।

सौ जन्म कम हैं तेरा ऋण चुकाने को
देवता भी तरसें तुझ जैसी माँ को पाने को
जन्म हमें देकर तुमने हमें निहाल किया
माँ ! तुमने हम दोनों को अकेले ही पाल लिया।

डॉ. आशु जैन

52.

क्या लिखूँ उस माँ के लिए
जिसने मुझे बनाया
क्या लिखूँ उस माँ के लिए
जिसने अपने दर्द भुला
मुझे हँसाया
क्या लिखूँ उस माँ के लिए
जो दिनभर काम करती रहती है
क्या लिखूँ उस माँ के लिए
जो बोलने के पहले ही
सब कुछ कर देती है
क्या लिखूँ उस माँ के लिए
जो हमेशा हम
सबका ख़याल रखती है
क्या लिखूँ उस माँ के लिए
जो पापा की जान है
भाई का अभिमान है
मेरा संसार है
बहुत प्यारी है मेरी माँ

डॉ० कावेरी रूसिया

53.

माँ मुझको रहने दे छोटी, पड़ी रहूं मैं तेरी गोद में
मुट्ठी भींचे मोटी-मोटी, माँ मुझको रहने दे छोटी।

चढ़ूं कभी बाबा के कांधे
बनकर उनकी नटखट पोती
दादी उतारे नज़र नित मेरी
लेकर हाथ नमक और रोटी, माँ मुझको रहने दे छोटी।

पकड़ के उंगली पापा मेरे
चलना सिखाना चाहे मुझको
नन्हे पग मेरे डगमग होते
झट भर ले बाहों में अपनी
सीपी में जैसे नन्हा मोती, माँ मुझको रहने दे छोटी।

भाई मेरे बडे है नटखट
खेल मुझे नित नये खिलाते
मैं जो रूठूँ उनसे जरा भी
झट से मेरी खींचे चोटी, माँ मुझको रहने दे छोटी।

जब हो जाऊँ १५-१६की,
मत डांटना, गोल क्यों नहीं बनी रोटी?
२२-२३ की हो जाऊं मैं तब
मत लंघवाना अपनी ड्योढ़ी
माँ मुझको रहने दे छोटी, पड़ी रहूँ माँ तेरी गोद में
मुट्ठी भींचे मोटी-मोटी, माँ मुझको रहने दे छोटी।

लीना शर्मा

54.

मेरी मन के कोने है मैं छुपी सहमी सी
वो छोटी से बच्ची..
इस दुनिया से जब थक जाती है।
फिर माँ तुझे ये रुआसी हो कर बुलाती है।
कि माँ लोरी गा के तू मुझको सुलाए।
परियो की कहानी,बाहों का झूला तू मुझको झुलाए।
अब भी तेरा आँचल मुझे शीतल छाया देता है माँ..
अब भी मेरा बचपन तुझे देख के जीता है, माँ...
अब भी दिल करता है मेरा कि..
में झूठमूठ का रुठ जाँऊ और तू मुझ को मनाए।
बनाये ढेर से पकवान और अपने हाथों से मुझको खिलाए
माँ अब भी तू मेरी हर फरमाइशें पूरी करती जाए।
मेरी रानी बेटी कहकर मुझको गले लगाए।
लगाए काला टीका अपनी आँखों के काजल का...
दुनिया की बुरी नजरों से मुझको बचाए।
क्या तुझे पता है माँ!
अब भी तेरी गोद में रखकर सर..
मैं कुछ पल सुकून की नींद पाती हूँ।
और जब लौट आती हूँ,परियों की नगरी से..
हौसलों आस का दामन थामे..
फिर जमाने की भीड़ में शामिल हो जाती हूँ।

नवनीता कटकवार

55.

मेरे सारे शब्द
एहसास
अल्फाज
नज़्में,
मेरी सारी कविताएं
कलमें और उनकी स्याही
सब असमर्थ है
जो बता सके
काशी काबा
और चारों धाम
माँ के पल्लू की छांव
कितनी गहरी और कितनी घनी
ना जाने वो किस मिट्टी की बनी
पूरे जगत की वो धूरी है
माँ तो हमेशा खुद में पूरी है
जिसके बिना
हर कहानी अधूरी है

रजनी शर्मा

56.

धूप में छाँव सी,
बसंत में बहार सी,
बारिश में कुछ आड़ सी,
शीत में कुछ उष्ण सी,
होती है जो, वो होती है माँ।
ममता लुटाती,
लोरी सुनाती,
भूख भी मिटाती,
बिना कहे ही वो, सब समझ जाती,
अपने दुःख को हमसे जो छुपाती,
सारे कष्टों को सहजता से,
सहन कर जाती, वो होती है माँ।
वाणी उसकी मधु सी,
शिक्षा जिसकी कवच सी,
विपदा में वो चंडी सी,
क्रुद्ध होकर कटार सी,
सब कष्टों से जो जूझ जाती, वो होती है माँ।
रूप इसके हैं अनेक,
जन्मदात्री माँ, धरती माँ, गऊ माँ,
गुरु माँ (गुरु पत्नी), रानी माँ,
ब्राह्मणी माँ, आया माँ।
सातों माँएं,
मिलकर इस जीवन को, धन्य बनाती,
मैं भी, उनपर बारम्बार शीश नवाती।

पिंकी परूथी "अनामिका"

57.

माँ,
तुम सिर्फ माँ हो,
तुम ईश्वर का प्रतिरूप कदापि नहीं,
उसका तो अस्तित्व भी
माँ के अभाव में अधूरा है,
तुम्हारी पूर्णता के लिए
एक ही तो शब्द है- माँ,
तुम दुनिया के
हर शब्दकोश में समाहित शब्द की तुलना में
कही अधिक ऊपर हो,
अनुपम,
अद्‌वितीय,
अतुलनीय,
क्योंकि माँ तुम
"व्यक्त" हो तो सिर्फ अपने संबोधित नाम से
शेष तो तुम "अव्यक्त"
अनुभूति का संसार हो
तुलनात्मक शब्दों से अहसास की व्याख्या
हर कलमकार की
अपूर्ण अभिव्यक्ति है,
माँ तेरे चरणों में, तेरे सम्बोधन में, मेरे जीवन की शक्ति है।

प्रदीप कुमार अरोरा, झाबुआ (म.प्र.)

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन झलकियाँ

अन्तरा शब्द शक्ति के प्रकल्प एवं अब तक किये कार्य

1. व्हाट्सअप समूह 2 फरवरी 2016 से।
2. फेसबुक समूह 2 फरवरी 2016 से।
3. लोकजंग दैनिक संध्या समाचार पत्र में अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर 7–8 रचनाओं का सोमवार से शुक्रवार तक प्रकाशन 1 नवंबर 2016 से 31 दिसम्बर 2019 तक ।
4. फेसबुक पेज 16 फरवरी 2017 से।
5. मासिक वेब पत्रिका 1 जुलाई 2017 से।
6. अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन 25 मार्च 2018 से।
7. ईबुक प्रकाशन 15 जनवरी 2019 से।
8. अब तक लगभग 450 से अधिक पुस्तकों और 20 साझा संग्रहों का प्रकाशन, विमोचन और 955 सम्मान अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये गए।
9. 1 जून 2019 से अन्तरा शब्द शक्ति एक पंजीकृत सेवा संस्था के रूप में भी कार्यरत है।
10. 21 सितंबर 2019 से बहुभाषा समन्वय प्रकल्प कार्यरत है।
11. 1 अक्टूबर 2019 से अन्तरा शब्दशक्ति की रचनाओं का वेब पृष्ठ ''सृजन शब्द से शक्ति का'' संपादित एवं प्रकाशित।
12. 119 रचनाकारों को आपातकाल में सृजन फुलवारी में सृजन हेतु 'कलम के सिपाही सम्मान 2020'।
13. प्रकाशन द्वारा 730 दिनों में 365 से अधिक किताबों, मासिक अंक, समाचार पत्रों द्वारा हिन्दी का प्रचार एवं हिन्दी सेवा एवं सम्मान हेतु वर्ल्डबुक ऑफ लंदन सम्मान 2020 प्राप्त।
14. 'आपतकाल मे सृजन फुलवारी' में 121 किताबों का 51 दिन में प्रकाशन हेतु ''ग्लोबल बुक ऑफ लिटरेचर अवार्ड्स 2020'' प्राप्त।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-216-6

मूल्य 120/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/